मधुबन ओम् शान्ति अंक 379 फरवरी 2024

पत्र-पुष्प

"जीवन में मधुरता और स्नेह का गुण धारण कर लो तो दूसरे सब गुण सहज आ जायेंगे"

(निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनों प्रति दादी जी का याद-पत्र : 20-01-2024)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा मधुरता रूपी मधु से सम्पन्न, रूहानियत के रंग में रंगे हुए सफलता के सितारे, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने जनवरी मास में प्यारे ब्रह्मा बाबा की विशेष स्मृतियों में रह उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का शुभ संकल्प लेकर बहुत अच्छी तपस्या की होगी। समय प्रमाण सेवाओं में रहते हुए डबल लाइट फरिश्ता बनने के लिए बाबा हम सभी बच्चों को निमित्तपन की स्मृति, निर्माणचित्त की स्थिति और निर्मल वाणी पर विशेष ध्यान खिंचवा रहे हैं। अभी इस फरवरी मास में हम सभी मधुरता और सरलता के गुण पर विशेष अटेन्शन देकर हर कार्य में सफलता की अनुभूति करेंगे। बाबा कहते बच्चे, मधुरता ऐसी धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। बाबा के दो मधुर बोल और मीठी दृष्टि ने हम सबकी जीवन परिवर्तन कर दी। तो हमें भी बाबा के समान मधुरता रूपी गुण को धारण कर सबको मधुर बनाना है। यह मधुरता की सौगात सदा अपने साथ रखनी है। संगठन में हर एक की नेचर तो अपनी-अपनी है, लेकिन स्वयं की नेचर अगर इज़ी है तो वाणी में मधुरता सहज आ जाती है। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसे सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर लेना। इज़ी अर्थात् मिलनसार, इससे संगठन सदा एकमत रहता है। बापदादा की यही आश है कि मेरे हर बच्चे के संकल्प शुद्ध हों, वाणी मधुर हो, वायुमण्डल एकमत का हो तो परमात्म कार्य की प्रत्यक्षता सहज हो जायेगी।

बोलो, दृढ़ता के शुद्ध संकल्प द्वारा मधुरता रूपी मधु को साथ रख अपने मधुसूदन (बाप) का नाम बाला करेंगे ना! तो आओ हम सभी संकल्प लें कि जीवन में विशेष दो धारणायें जरूर करनी है: 1. मधुरता 2. नम्रता। इन्हीं दो विशेष धारणाओं से विश्व कल्याणकारी महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

बाकी सेवाओं के विस्तार के साथ विशेष समय निकालकर अशरीरी बनने की ड्रिल भी जरूर करनी है। अभी तो समय यही इशारा दे रहा है कि अचानक के पहले सदा एवररेडी रहो। करनकरावनहार बाबा जो सेवायें करा रहा है, निमित्त बन करते चलो। लेकिन साक्षी दृष्टा स्थिति का अभ्यास करते पांचों स्वरूपों की ड्रिल भी करते रहो, यही ड्रिल स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनायेगी। मनोबल बढ़ता रहेगा। अभी तो शक्तिशाली मन्सा द्वारा प्रकृति के पांचों तत्वों को भी विशेष सकाश देने की सेवा करनी है, इसके लिए राय है कि हर सेवास्थान पर नुम:शाम के समय विशेष एक घण्टा शक्तिशाली योग का कार्यक्रम जरूर चले। यह संगठित योग प्रकृति के तत्वों की सेवा करेगा। स्वयं को, साथियों को और सेवास्थानों को निर्विघ्न बनायेगा। यही सभी के लिए सुरक्षा कवच है।

वर्तमान समय मधुबन बेहद घर में देश विदेश के अनेकानेक ब्राह्मण बच्चों की बहुत अच्छी रिमझिम चल रही है। बापदादा की सूक्ष्म सकाश, बाबा के घर के शक्तिशाली पवित्र प्रकम्पन्न सभी में शक्तियों का संचार कर देते हैं।

अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को विशेष स्नेह सम्पन्न याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

मधुरता का गुण धारण कर मधुसूदन का नाम बाला करो

1) मधुरता ऐसी चीज़ है जिसकी धारणा से सदा हर्षित रह सकते हो और दूसरों को भी कर सकते हो। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है, और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला कर सकते हो। मधुरता रूपी मधु जिनके पास है उन्हें हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। उनके मस्तक पर सफलता का सितारा चमकता रहता है।

2) जो रूहानियत के रंग में सदा रंगे हुए रहते हैं उनमें मधुरता का गुण स्वत: आ जाता है, जो अपनी वा दूसरों की बीती को नहीं देखते वह सरलचित हो जाते हैं। सरलचित आत्माओं में मधुरता का गुण नेचुरल होता है। उनके नयनों से, मुख से और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है।

3) शक्तियों के चित्रों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण दिखाते हैं। सहनशीलता से सरलता वा मधुरता स्वत: आ जाती है। अभी इन दोनों गुणों को समान बनाना है। जितना ज्वाला रूप उतना शीतलता का रूप। सूरत शीतलता की और कर्तव्य ज्वाला का हो। वृत्ति, वाणी और कर्म में सदा मधुरता का गुण हो।

4) ईश्वरीय परिवार में आई हुई हर आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है। अपनी विशेषता को जानकर उन्हें कार्य में लगाओ। मधुरता का गुण, स्नेह का गुण जो भी स्वयं में हैं उसे कार्य में लगाओ तो दूसरे सब गुण सहज आते जायेंगे। जैसे लोहा पारस से लगकर पारस बन जाता है वैसे आपका संग कडुवे को भी मीठा बना दे।

5) आप बच्चों के जीवन में विशेष दो धारणायें जरूर होनी चाहिए – 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। वाचा में अगर सत्यता और मधुरता है तो वाणी की मार्क्स जमा होती हैं।

6) आपके शब्दों में मधुरता हो लेकिन अन्दर समाई हुई अथॉरिटी हो, शब्द रहमदिल की भावना के हो। आप जो बोलते हो वही स्वरूप में हो। नम्रता, स्नेह, मधुरता, सत्यता आदि गुण जब जीवन में धारण होंगे तब बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा कर सकेंगे।

7) आपका एक एक बोल, बोल नहीं लेकिन मोती है। ऐसा लगे जैसे मोतियों की वर्षा हो रही है, इसको कहा जाता है मधुरता। ऐसा बोल बोलो जो सुनने वाले सोचें कि ऐसा बोल हम भी बोलेंगे। सबको सुनकर सीखने की, फालो करने की प्रेरणा मिले। जो भी बोल निकलें वह ऐसे हों जो कोई टेप करके फिर रिपीट करके सुने।

8) आपके मधुरता के बोल, मधुर बोल के वायब्रेशन स्वत: ही सबको अपनी ओर आकर्षित करेंगे। आपका हर बोल, हर मंसा का संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव हो तो संगठन में एकता आ जायेगी। मतभेद खत्म हो जायेंगे।

9) कई बच्चे कहते हैं मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। लेकिन आप अपने निज़ी स्व के भाव (आत्मिक भाव) में रहो तो यह देहभान वाला स्वभाव स्वत: परिवर्तन हो जायेगा। आपके मधुर बोल दूसरों को भी खुश करते और स्वयं को भी खुश रखते। आपकी सदा मीठी दृष्टि, मीठे बोल, मीठे कर्म हो। जो भी सामने आये उसे दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल लो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उसकी सृष्टि को बदल लेंगे।

10) मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। बाप के दो मधुर बोल से आप भी परिवर्तन हुए हो। मीठे बच्चे तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो, इन्हीं दो मधुर बोल और मीठी दृष्टि ने आपकी जीवन बदल दी। तो ऐसी मधुरता धारण कर औरों को भी मधुर बनाओ।

11) मधुरता की सौगात सदा साथ रखना। सदा मीठा रहना और मीठा बनाना। जैसे मकरसंक्राति के यादगार में तिल के साथ मीठा मिलाकर खाते हैं, यह भी संगठन की शक्ति दिखाई है। तिल आत्मा के बिन्दू स्वरूप का और मिठाई मधुरता का, तो जब आप आत्मिक स्थिति में स्थित रह, मधुरता की मिठाई खाते और खिलाते हो तो संगठन एक हो जाता है।

12) आपके संकल्पों में बोल वा कर्म में मधुरता हो तो मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार करा सकते हो। बापदादा भी रोज़ बच्चों को कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाबा'। तो यह रोज़ का मधुर बोल मधुर बना देता है। यह मधुरता ही महानता है।

13) जैसे 'वाह मीठा बाबा' कहने से मुख मीठा हो जाता है क्योंकि प्राप्ति होती है। ऐसे हर ब्राह्मण आत्मा कोई भी ब्राह्मण का नाम लेते ही खुश हो जाए क्योंकि आप सभी भी बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषता से एक दो के सहयोगी साथी बन उन्नति को प्राप्त करते हो। हर एक आत्मा अपनी प्राप्त विशेषताओं से आपस में खुशी की लेन-देन करते भी हो और आगे भी सदा करते रहना।

14) जैसे ब्रह्मा बाप ने सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता वही कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते - ''बाबा तो बाबा है!'' इसको कहा जाता है सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना। तो कदम पर कदम रखना माना फालो फादर करना अर्थात् बाप समान बनना।

15) जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले सेवा के निमित्त भल अलग-अलग स्थानों पर रहते हो लेकिन मन तो मधुबन में रहता है ना। मधुबन अर्थात् मधुरता सम्पन्न। कभी बच्चों पर या कार्य व्यवहार में आते आपस में क्रोध तो नहीं करते हो? कोई कैसा भी हो, अन्जान बच्चा हो या बड़ा हो लेकिन ज्ञान से तो उस समय अन्जान है ना! अन्जान के ऊपर कभी क्रोध नहीं किया जाता, रहम किया जाता है।

16) रोज़ चेक करो कि आज मन्सा या वाचा में श्रेष्ठता की नवीनता कितनी लाई? मन्सा में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रहे, बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता रहे। ब्राह्मण आत्माओं के बोल साधारण बोल नहीं हो सकते। मधुबन और मधुबन का बाबा सदा साथ रहे तो मधुरता का अनुभव होता रहेगा।

17) मधुरता की मिठाई से स्वयं का मुख मीठा करते रहना और मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा दूसरों का भी मुख मीठा कराते रहना। बापदादा आप बच्चों के हर बोल में मधुरता, विशेषता देखने चाहते हैं, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं।

18) बापदादा ने देखा कि हर बच्चे की नेचर तो अपनी-अपनी है, लेकिन सर्व बातों में, सम्बन्ध में, मन्सा में विजयी और सफल, वाणी में मधुरता तभी आ सकती है जब नेचर इज़ी हो। अलबेली नेचर नहीं। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देना। इज़ी अर्थात् मिलनसार।

19) चेक करो कि हर कर्मेन्द्रिय मुझ राजा के आर्डर प्रमाण चलती है? ऑर्डर करें मनमनाभव और मन जाये निगेटिव और वेस्ट थाट्स में, ऑर्डर करें मधुरता स्वरूप बनना है और समस्या व परिस्थिति अनुसार सूक्ष्म रूप में भी आवेश वा चिड़चिड़ापन आ रहा है, तो क्या यह ऑर्डर प्रमाण है? लक्ष्य रहे मुझे ही मोल्ड होना है। मुझे ही मरना है।

20) आपके चेहरे पर एक तो सदा रूहानियत की मुस्कराहट हो, दूसरा - मुख में सदा मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की गिफ्ट दे दो। और कुछ नहीं तो दो मीठे बोल की गिफ्ट भी देना जरूर, खाली हाथ कोई न जाये।

21) एक दो का मुख मीठा कराने के साथ आपका मुखड़ा (चेहरा) भी मीठा हो। आपके पास इतनी मधुरता जमा हो, जो बांटो तो भी भरपूर रहो और इस खजाने को तो जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा, कम नहीं होगा। अगर कोई ज्ञान सुनने वाला नहीं है तो भी आप मीठी शक्तिशाली दृष्टि देना।

22) आपका हर कर्म गुण सम्पन्न हो, जिस समय जिस गुण की आवश्यकता है वह गुण चेहरे, चलन में इमर्ज दिखाई दे। मानों कर्म के समय सरलता के गुण की, मधुरता की आवश्यकता है, चाहे बोल में, चाहे कर्म में अगर सरलता, मधुरता के बजाए थोड़ा भी आवेशता या थकावट के कारण बोल मधुर नहीं है,

चेहरा मधुर नहीं है, सीरियस है तो गुण सम्पन्न तो नहीं कहेंगे ना! कैसे भी सरकमस्टॉन्स हो लेकिन मेरा जो गुण है, वह इमर्ज होना चाहिए।

23) आपका मन्सा संकल्प और वाणी अर्थात् बोल और सम्बन्ध-सम्पर्क सदा मीठा, मधुरता सम्पन्न अर्थात् महान हो क्योंकि वर्तमान समय लोग प्रैक्टिकल लाइफ देखने चाहते हैं। वाणी की सेवा से प्रभावित हो नज़दीक तो आते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल मधुरता, महानता, श्रेष्ठ भावना, चलन और चेहरे को देख स्वयं भी परिवर्तन के लिए प्रेरणा लेंगे। समय प्रमाण आप सबको चेहरे और चलन से सेवा करनी पड़ेगी।

24) आप सबके मस्तक से लाइट का प्रकाश अनुभव हो, नयनों से रूहानियत की शक्ति अनुभव हो। मुख से, चेहरे से मधुरता, मुस्कुराता चेहरा अनुभव हो, इससे ही बापदादा की प्रत्यक्षता वा कार्य की प्रत्यक्षता होगी। तो अभी ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो, एक दो को सहयोग दो, आगे बढ़ाओ। कमजोर को सहारा दो। ऐसा संगठन बनाओ।

25) आप ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी। इस त्याग से सरलता, मधुरता और सहनशीलता का गुण सहज आ जाता है। अगर सरलता नहीं तो मधुरता भी नहीं आ सकती। एक दो में स्नेही बनना है तो पहले देह सहित सर्वस्व त्यागी बनो। नॉलेजफुल के साथ सरल और मधुर स्वभाव हो इसे ही कहते हैं बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन।

26) जीवन में सरलता वा मधुरता का गुण तभी आयेगा जब आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर न हो। स्तुति और निंदा दो शब्द हैं। जो कर्म करते हो अगर उनके फल की इच्छा वा लोभ रहता है तो स्थिति एकरस नहीं रह सकती। कईयों की स्थिति का आधार स्तुति है। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है। अगर निंदा होती है तो धनी को भूल निधन के बन जाते हैं इसलिए स्तुति के आधार पर स्थिति नहीं रखना।

27) अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता और मधुरता को धारण करो। फिर देखो सर्विस वा कर्तव्य की सफलता कितनी श्रेष्ठ होती है। अभी स्मृति और वाणी दोनों ही प्लेन हो, कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लेन हो जायेंगे तो फिर प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। फिर सफलता प्लेन (एरोप्लेन) की माफिक उड़ेगी।

28) देवताओं के जो चित्र बनाते हैं, उनकी सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। फीचर्स में सरलता जिसको आप भोलापन कहते हो। जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मन्सा में भी सरल, वाचा में भी सरल, कर्म में भी सरल होगा। यह सरलता का गुण ही मधुरता का आधार है, इससे ही बापदादा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

29) बेहद का इतना बड़ा ब्राह्मण परिवार देख-देख कर कितनी खुशी होती है। यह कितना अच्छा परिवार है। ऐसे लगता है जैसे हम मिले हुए ही हैं। ऐसे ही मिलते रहेंगे। जहाँ देखो वहाँ कितनी मधुरता है। सभी मेरा बाबा, मेरा बाबा कह कितना मुस्करा रहे हैं। पूरे कल्प में संगम पर ही ऐसा परिवार मिलता है, तो आपस में एक दो की विशेषता देखते, दिलखुश मिठाई खाते, खिलाते मधुरता सम्पन्न व्यवहार करो, इससे सब विघ्न सहज खत्म हो जायेंगे।

''जीवन निर्माण की पहली कसौटी - शुद्ध, सरल और मधुर व्यवहार'' (विशेष चिंतन)

1) जीवन के सर्वांगीण विकास व सफलता के लिए जितनी आवश्यकता चिंतन और चरित्र के निर्माण की है उतना ही व्यवहार में कुशलता, सरलता, शालीनता और पवित्रता की है। आध्यात्मिक दृष्टि से समस्त साधनाओं का इसे ही मूल आधार माना गया है।

2) व्यवहार की शीतलता, सरलता और मधुरता से व्यक्ति मन-इच्छित सफलता प्राप्त कर सकता है। आध्यात्म व समाज दोनों में ही अच्छे आचरण और व्यवहार कुशलता का महत्वपूर्ण स्थान है। आध्यात्म क्षेत्र में व्यक्ति के संस्कार प्रमुख होते हैं और समाज में व्यक्ति के व्यवहार को प्रधानता दी जाती है।

3) अच्छे संस्कार, अच्छे चरित्र से युक्त व्यक्तित्व का व्यवहार भी अच्छा होता है परन्तु बुरे संस्कार, घटिया चरित्र वालों का व्यवहार एवं आचरण नकारात्मकता को दर्शाता है। चरित्रहीन व्यक्ति किसी स्वार्थ अथवा दबाव या नैतिक सामाजिक भय से कुछ देर तक अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन कर भी ले तो भी कभी न कभी उसका असली चरित्र सामने आ ही जाता है।

4) वर्तमान समय की आवयश्कता है अच्छे आचरण और व्यवहार कुशलता की, आन्तरिक व्यक्तित्व में श्रेष्ठता व सरलता आने पर व्यवहार स्वत: मधुर हो जाता है। व्यवहार ही समाज में हमारे जीवन व व्यक्तित्व को एक विशेष पहचान देता है। व्यवहार ही सफलता और असफलता का कारण बनता है।

5) संसार में जब भी जहाँ भी किसी सभ्यता और संस्कृति ने जीवन-पद्धति का निर्माण किया है तो उसमें मानवीय व्यवहार को ही सबसे प्रमुख अंग माना है। आत्म-विद्या और ब्रह्म-विद्या का सीधा संबंध मधुर व्यवहार एवं आचरण से है। इस विद्या का सार है - स्वयं में मधुर बनना और दूसरों में मधुरता फैलाना।

6) प्रकृति के सभी तत्व मधुरता प्रदान करते हैं। उनमें कहीं राग-द्वेष या घृणा नहीं है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी प्रेम, सुख और शान्ति चाहते हैं। सुख और शान्ति का सबसे सरल उपाय है - जीवन में राग द्वेष, हिंसा, क्रोध, अहम्-वहम, कटुवचन आदि का त्याग कर मधुरता लाना। व्यवहार की मधुरता से प्रेम, मित्रता, सहानुभूति और आत्मीयता जैसे गुण स्वत: जाग्रत व विकसित होते हैं।

7) मधु-विद्या की प्राप्ति तभी सम्भव है जब व्यक्ति चरित्रवान और सात्विक संस्कारों से युक्त हो। मधुविद्या का आधार सदाचार, सत्यनिष्ठा और सात्विकता जैसे गुण हैं। इस संसार में मधुरता और कटुता दोनों व्याप्त हैं। दोनों में एक को चुनने के लिए मनुष्य स्वतन्त्र है। अत: मधुरता का चयन करना ही सर्व विद्या हितकारी है।

8) मधुरता सम्पन्न व्यवहार व्यक्तिगत जीवन में तथा समाज में सद्भाव, प्रेम, सहानुभूति व स्नेह उत्पन्न कर जीवन में सुख, शान्ति और प्रसन्नता प्रदान करता है। अत: हमारी पूरी दिनचर्या मधुरता से पूर्ण हो। उठना, बैठना, मिलना, बातचीत आदि सभी कार्यों में मधुरता बनी रहे। अधिकांश समस्याओं एवं विवादों का कारण कटुवचन, व्यंग्य, ताना मारना, निंदा आदि हैं। मधुरता हमें इन दुर्गुणों से बचाती है।

9) हमारी जीभ के अगले और पिछले भाग में मधुरता बनी रहे अर्थात् मुंह से जो भी वचन निकलें वो मीठे हों, वचनों में थोड़ी भी कटुता न हो। मधुर वचन वशीकरण मंत्र की भांति होते हैं, जिससे सारा समाज हमारे अधीन हो सकता है। दूसरों के हृदय में अपना स्थान बनाने के लिए मधुर वचनों से ज्यादा सरल उपाय और कोई नहीं है

10) मधुरता सभी को प्रिय है अत: मधुर वाणी और व्यवहार वालों से सभी प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं और ऐसा व्यक्ति लोकप्रिय बन जाता है। अपने चारों ओर मधुरता को फैलाना, उसका प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है परन्तु अपने आस-पास के वातावरण को भी मधुर बनाकर रखें, तो जो भी सम्पर्क में आयेगा वह अपनी कटुता और दुर्गुणों को त्यागने के लिए विवश हो जायेगा। उसके जीवन में मधुरता का संचार होने लगेगा।

11) मनुष्य को प्रकृति से मधुर व्यवहार, लोक कल्याण की प्रेरणा व शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। हमारे मन वचन कर्म और व्यवहार में मधुरता होनी चाहिए। व्यक्ति को जहाँ से भी, जैसे भी मधुरता की शिक्षा मिले उसे ग्रहण कर परिवार, समाज और राष्ट्र में मधुरता का प्रसार अवश्य करना चाहिए।

12) जिसका व्यवहार मधुर है वह समाज में स्नेह, आत्मीयता के साथ अनेकानेक उपलब्धियां सहज प्राप्त कर लेता है। व्यक्तित्व में मधुरता का आकर्षण सबसे ऊपर है। ऐसा व्यक्ति जहाँ भी रहता है वहाँ निरन्तर सद्भावना, प्रेम और सहानुभूति का संचार होने लगता है।

13) जो सच्चे अर्थों में मधु विद्या के अधिकारी बनना चाहते हैं तो इसकी शुरूआत मीठे वचनों से करनी है। मानवीय व्यवहार में मधुर भाषा, मीठे शब्दों, वचनों का महत्वपूर्ण स्थान है। मधुर वाणी के प्रभाव से बिगड़े काम बन जाते हैं। टूटे संबंध जुड़ जाते हैं, रूठे लोग मान जाते हैं।

14) बड़ी-बड़ी सफलताओं, उपलब्धियों के पीछे मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार की महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए कहते हैं - ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे, आपुहि शीतल होए। अत: बोलते समय उचित शब्दों को ही चुनें। सदैव यह ध्यान रखें कि हमारी वाणी अथवा शब्दों से किसी को भी बुरा न लगे।

15) वाणी की मधुरता और शब्दों की मर्यादा से हमारा व्यवहार ऊंचाईयों को प्राप्त करता है। चिंतन की श्रेष्ठता और चरित्र की पावनता के साथ यदि सार्थक रूप से व्यवहार की मधुरता मिल जाए तो हमारा जीवन एवं व्यक्तित्व सम्पूर्णता से विकसित हो उठता है।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

"बाबा खुश होकर शक्ति उन्हें देता है जो कहने से भी ज्यादा करके दिखाते हैं"

(14-12-08)

जैसे हर वर्ष मधुबन आते जाते रहते हैं, वैसे माया आती रहती है, कभी हार खाते, कभी विजय होती है। ऐसे अभी नहीं करना, जैसे दत्तात्रेय ने बहुत गुरू किये यानि उनसे गुण उठाया, ऐसे माया से गुण उठाके मायाजीत बनो। बाबा, हम सारा वर्ष मायाजीत रहेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा मधुबन में करके जाओ तो सदा विजयी रहेंगे। कहने से ज्यादा करके दिखाने से बाबा बहुत खुश होगा, शक्ति भी देगा। रोज़ अमृतवेले बाबा से मिलन मनाके जो दृढ़ संकल्प किया है, वो याद करते कर्म योगी बन कर्मक्षेत्र में जाओ। फिर बीच-बीच में चेक भी करते रहो कि जो स्वमान मैंने सुबह बाबा के सामने लिया था वो स्मृति में है? अगर स्वमान भूल गया है तो स्मृति में फिर से लाओ। अपने को चेक करना है कि मुझे बाबा याद हैं या नहीं? स्वमान याद है या नहीं? क्योंकि बाबा को याद करके अपने पापों को भस्म करने के लिए बाबा के ब्राह्मण बच्चे बने हैं, ना कि दूसरों को देखने के लिए। तो हम बी.के.बने ही है कुछ परिवर्तन करने के लिए...। बाबा कहते तुम बच्चे अपने को ठीक करेंगे तो योग में रहकर अन्य लोगों को भी शान्ति की शक्ति दे सकेंगे। तो जो सोचा है वो करना ही है। देखेंगे, सोचेंगे, करना तो है, कर तो रहा हूँ... यह भाषा यूज़ न करके, करना ही है ऐसे कहो। बाबा ने हम बच्चों में जो आश रखी है वो पूर्ण करना ही है, इसमें कांध हिलाओ। एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये, अगर व्यर्थ जायेगा तो अच्छा नहीं है। यहाँ आये हैं रिफ्रेश होने के लिए, भले कर्म भी करेंगे लेकिन कर्मयोगी होके करना है। सेकण्ड और श्वाँस कुछ भी व्यर्थ न जाये इतना अटेन्शन रखो तो समर्थ रहेंगे। यहाँ का यह अभ्यास वहाँ बहुत काम आयेगा। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"जिसमें नम्रता, धैर्यता और सच्चाई है उनका योग अच्छा लगता, वह सेवाओं में कभी थकते नहीं"

(14-7-06)

हम बाबा के बच्चे ईश्वरीय सन्तान, ईश्वरीय फैमिली हैं। अपने को आत्मा समझना, देह के भान से परे रहना, यह है पढ़ाई। यह भी वण्डरफुल बात है कि हम सब एक के बच्चे हैं। किसी का भी माँ-बाप दूसरा नहीं है। हम सब एक बाप के बच्चे हैं। वैसे लौकिक में कहते हैं एक ब्लड है। फिर भाई-बहन का आपस में प्यार न हो तो क्या कहा जायेगा? रुहानी बच्चे हो, रुहों को कहा है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा फिर कहती है बाबा मैं आपका बच्चा हूँ। बच्चे-बच्चे कहके बाबा ने ब्राह्मण बना दिया। एडाप्ट करके कहा तुम ब्राह्मण कुल के हो। यह अन्दर से संस्कारों में नशा हो, स्मृति हो।

देखा गया है, नुमा शाम के समय किसी को भी योग में नींद नहीं आती है। तो यह नियम भी हमारा पक्का हो, खींच हो। इधर-उधर घूमने के बजाए, संगठन में आकर याद में बैठ जायें। संगठन के योग का सुख बहुत है। इसमें अलबेले न हों। इस नियम में जो फायदा है, वह बहुत मदद करता है। अमृतवेले भी घड़ी सोने नहीं देगी। दिन में कार्य करते भी डिटैच रहकर काम करेंगे तो थकावट नहीं होगी। थकते वह हैं जिनमें नम्रता, धैर्यता की कमी है। जो नम्रचित हैं उनके अनेक सहयोगी बन जाते हैं। जो धैर्यता और प्रेम से काम करते हैं, उन्हें कोई भी काम बड़ा नहीं लगता। उनका योग भी अच्छा होता है। जिसमें नम्रता की कमी है, वह जहाँ भी काम करते हैं, जिनके साथ भी काम करते हैं वो जल्दी थक जाते हैं। तो दोष किसका? अगर

मेरे में नम्रता है, धैर्यता है, सच्चाई है, तो अच्छा वातावरण बन जाता है। जो थकावट में काम करते हैं उन्हें योग में भी थकावट लगती है। सच्चाई, स्नेह और सहयोग से काम सहज हो जाता है।

तो दिल से काम नहीं करते वो अच्छा काम भी बिगाड़ देते हैं। अच्छा किया हुआ भी बिगाड़ देते हैं। उस समय पता नहीं पड़ेगा पर नुकसान बहुत होगा। वही हाथ सभी अंगुलियां मिलकर लड्डू बना सकती हैं, उसी हाथ से थप्पड़ भी मार देते हैं। हमारे एक हाथ में मुरली हो, दूसरे हाथ में स्वर्ग का गोला। हम दुनिया को स्वर्ग बना रहे हैं। स्वर्ग में रहेंगे पीछे पर संस्कार अभी बनायेंगे।

हमारे चेहरे और चलन को देखकर कहें कि ये तो स्वर्ग में रहते हैं। हमारी रायॅल पर्सनैलिटी को देख दूसरे भी पीछे पीछे आने लगेंगे। हम अपना बैग-बैगेज पहले से रवाना कर देते हैं। वहाँ पहुचेंगे तो मिल जायेगा, साथ में क्यों ले जाऊं। जो संगम पर कर रहे हैं वह भविष्य के लिए कर रहे हैं। उसका उजूरा है सदा सन्तुष्ट। ऐसे नहीं कोई सीट मिले, कोई पोजीशन मिले, वो देवता कैसे बनेंगे!

कोई-कोई को बहाना बनाने की बड़ी आदत होती है। याद और सेवा में बहाना देने वाले को अधीनता जरूर होगी। उन्हें प्रकृति भी साथ नहीं देगी। कोई न कोई कर्मबन्धन निकल आयेगा, जो ऊंचा पुरुषार्थ करने नहीं देगा क्योंकि बहाना बनाने की आदत ने भाग्य बनाने से वंचित कर लिया। उसमें भी सूक्ष्म है ईर्ष्या। भले कोई भाषण करे, लेकिन परिवार में मीठी जुबान न हो... तो कौन उन्हें पसन्द करेगा। कई हैं जो बर्तन मांजते भी सबसे बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध रखते हैं। तो प्रालब्ध ज्यादा किसकी बनेगी? जो कम्पलेन करता है, उसका भाग्य क्या होगा! अति सूक्ष्म है, सच्चा पुरुषार्थी न किसी की कम्पलेन करता, न उसकी कोई कम्पलेन करता। कईयों के पास तो कम्पलेन्ट की लिस्ट है। किसी की कोई कम्पलेन हो तो कहता है कोई बात नहीं। कम्पलेन उसने की, गुस्सा हमने किया.. तो क्या चार्ट रहा! जो एक्यूरेट हैं वह कभी सम्बन्ध नहीं बिगाड़ते, कम्पलेन करने वाले को भी थैंक्स देते हैं कि आपने बहुत अच्छा किया, जो बता दिया।

हम सब मेहमान हैं, पर दूसरों की मेहमाननिवाज़ी करना भी अक्ल का काम है, जिसमें मेरेपन का अभिमान होगा वो मेहमान नहीं है। उसमें ट्रस्टीपन होगा। तो नुमाशाम के समय ऐसी स्थिति बनाके रखें। जो बच्चा, जो स्टूडेन्ट अच्छा होता है वो माँ-बाप, टीचर की शिक्षा अनुसार चलता है। फिर जीवन भर याद रखता है कि यह मेरी माँ ने सिखाया, यह बाप ने सिखाया। उनके प्रति अन्दर बहुत प्यार, रिगार्ड रहता है। वह अपने शिक्षक का नाम बाला करता है। सभी के मुख से निकलता है कि यह तो बिल्कुल एक्यूरेट है। तो बाबा हम सबको अपने समान महिमा योग्य बनाना चाहता है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो, पुरुषार्थ से डरो नहीं" (1998)

1) बाबा कहते बच्चे, अपने स्वभाव को शीतल बनाओ। बहुत-बहुत नम्रचित और मीठे बनो। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह-रूहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर जरूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व-चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

2) हमें कुमार कुमारियों का बहुत फ़िकरात रहता। हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउन्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं, तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते – कुमार कुमारियाँ मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता। सेन्टर पर कुमारियाँ अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो – यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं कहती इस बात में समझो हम सन्यासी हैं। कुमार, कुमारी माना सन्यासी। सन्यासी माना हंसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका सन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आंच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा – क्योंकि हल्के होकर चले।

3) ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का आर्डर है। बाकी कोई आर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा – उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आंसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनियाँ से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया, उसने सब त्यागा। 3.30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए। इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

4) सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो। जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उनका ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए। लौकिक को भी थोड़ा चलाना करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिस-सर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टीकल लिखो, डायलाग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो वक्त पर सब काम आता है।

5) अगर सेवा में फोर्स है तो कुमारों के कारण, कुमार अपना तन भी लगाते, मन भी लगाते, धन भी लगाते। सभी सेन्टर्स की यह रिजल्ट है। आप कुमार सब चिन्ताओं से मुक्त हो। कुमार कुमारी माना संगम के जीवनमुक्त। कोई बन्धन नहीं। वृत्ति में मेरा बाबा, वायुमण्डल में वायब्रेशन है सब बाबा के बनें, कल्याण की भावना है। जीवन है बाबा की सेवा में। हम आप दुनिया के वायुमण्डल, वायब्रेशन से मुक्त हैं। हम दुनिया को बाबा के वायुमण्डल में बांधते हैं।

6) आप सब 100 परसेन्ट लकी हो। आप सबको सर्विस के लिए बाबा ने अपनी भुजायें बनाया है। आप सब समर्पण हो। अगर आप धन से सेवा नहीं करते तो सर्विस नहीं बढ़ती। आप यह नहीं सोचो हमें बाबा ने नौकरी का बन्धन दिया। आप धन से सहयोग न दो तो सेन्टर कैसे चले। आपका पूरा तन-मन-धन बाबा के प्रति है। आप 100 कमाओ उसमें 25 माँ बाप को, 25 अपने लिए तो 50 बाबा के कार्य में लगाओ। यही सोचो मैं बाबा के कार्य के लिए 5 टका कमाने गया हूँ। दुनिया ही गन्दी है। गन्दों के बीच हमें अपनी रूहानियत में रहना हैं क्योंकि बाबा के लिए कमा रहा हूँ। लौकिक माँ बाप ने पाला है उनको भी सहयोग देना मेरा फर्ज है। धन को परसेन्टेज़ से जरूर बाँटो।

7) जो कुमार अपने हाथ से पकाकर खाते हैं, मैं उन्हों को अपने से भी बड़ा मानती हूँ। आप धन्य हो। अगर सूखी रोटी खाकर चलते, तो बाबा आपको मदद देगा। आप दो रोटी खाओ बाबा की मस्ती में रहो। ऐसे नहीं सोचो रोज-रोज ऐसे कैसे होगा। अरे रोज संगम थोड़ेही आयेगा। जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे। धन्य बनना है तो त्यागी, तपस्वी बनो। तप से ही महान बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं।

8) अभी हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूँगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती – हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

9) अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं रखो। झगड़े का कारण है एक दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह जिन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूँ!

10) ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान-कारक अवगुण है – ''जिद्द का स्वभाव'', जिसमें जिद्द है उस पर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते। सबसे ज्यादा नुकसान इस जिद्द से होता है। जिद्द मनुष्य को रसातल पहुँचा देता है, इसलिए कभी किसी बात का जिद्द नहीं करना। कोई रांग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। जिद्द के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई जिद्द पकड़ता है तो आप हल्के हो जाओ। लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा। अच्छा - ओम् शान्ति।